अध्याय पंचम

शोध सार,

निष्कर्ष एवं व्याख्या

अध्याय– 5

शोध सार, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

राष्ट्र की उन्नति वहाँ की शिक्षा तथा स्वास्थ्य की समुचित व्यवस्था पर निर्भर करती है, चाहे वह कोई भी राष्ट्र हो, शिक्षा को उद्देश्य पूर्ण और उपयोगी बनाने के लिए उसमें समयानुसार परिवर्तन आवश्यक होता है। जिसमें बालक व बालिकाएं राष्ट्रोत्थान में अपनी भूमिका सकुशल निभा सके इसी के तहत भारतीय संविधान के अनुच्छेद–45 में 6–14 आयु वर्ग के सभी बालक एवं बालिकाओं को दस वर्ष की अवधि में अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया था। स्वतंत्रता के बाद आज तक शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए शासन ने कई प्रकार के महत्वपूर्ण कदम उठाये है। उन्हीं में एक प्राथमिक शिक्षा का लोकव्यापीकरण का लक्ष्य पूर्ण करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान के तहत कार्य प्रगति की बागडोर ऊँचे कदम पर बढ़ती जा रही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा में गुणवत्ता का स्तर बढ़ाने के लिए न्यूनतम अधिगम स्तर के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों में बच्चे भाषा संबंधी खासकर मातृभाषा के साथ–साथ हिन्दी भाषा में भी उपलब्धि को प्राप्त करने पर विशेष बल दिया है। क्योंकि बच्चें के सर्वांगीण विकास में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले सभी विषयों को वह भाषा के माध्यम से ही ग्रहण करता है। भाषा के बुनियादी कौशल– सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखना उनकी सारी शिक्षा को प्रभावित करते है।

हमारे देश में विभिन्न पारिवारिक स्तर वाले व्यक्ति है। अधिकतर सामान्य परिवार के होते है जो अपने बच्चे को सही आयु सीमा में शासन द्वारा संचालित या अशासकीय सामान्य प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश दिलाते है उनकी रूचि बच्चों को शिक्षित करने में होती है तथा वे बच्चों को अध्ययन हेतु पूर्ण प्रेरक सहयोग प्रदान करते है और ये बच्चे सामान्य रूप से बिना किसी व्यवधान के लगातार शिक्षा ग्रहण करते हैं।

परन्तु हमारे देश में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न आर्थिक एवं सामाजिक स्तर के व्यक्ति निवास करते है। वे सामान्य रूप से आर्थिक तंगी के कारण, जीवन यापन के विभिन्न तरीकों के कारण या फिर शिक्षा के प्रति रूचि न होने के कारण अपने बालकों को सामान्यतः संचालित विद्यालयों में सही आयु सीमा में प्रवेश नही दिलाते।

ऐसे परिवारों के बहुत से बच्चे सामान्यतः शिक्षा से वंचित हो जाते है या फिर एक–दो वर्ष अध्ययन कर शाला त्यागी हो जाते है जिसमें बालिकाओं की संख्या अधिक होती है। वास्तव में ऐसे बच्चों के शाला में न जुड़ पाने का प्रमुख कारण यही है कि ये बच्चे किसी न किसी काम से जुड़े है यह काम आर्थिक मजदूरी भी हो सकती है या घरेलु काम या छोटे भाई–बहनो की देखभाल भी।

ऐसे बच्चों को शिक्षा के अधिकार से वंचित नहीं रखा जा सकता। अतः उन्हें सामान्य शाला से जोड़ने हेतु ब्रिजकोर्स योजना प्रारंभ की गई है। ऐसे परिवार की बालिकाऐं जिन्हें शिक्षा ग्रहण करने हेतु उचित पारिवारिक वातावरण नही मिलता या उनके माता–पिता और परिवार के जीविकोपार्जन हेतु कुछ महीनों के लिए बाहर पलायन कर जाते है हेतु आवासीय ब्रिजकोर्स योजना प्रारम्भ की गई है। जिसमें बालिकायें एक साथ एक शिविर में रहकर शिक्षिकाओं के सान्निध्य में एक परिवार जैसे वातावरण में प्राथमिक शिक्षा गृहण कर परिवार जैसे वातावरण में प्राथमिक शिक्षा गृहण कर सामान्य विद्यालयों की कक्षा 3, 4 या 5 में अर्जित योग्यतानुसार प्रवेश पा सकेगी तथा ऐसी परिवारों के बालक–बालिकायें जो प्राथमिक शिक्षा से वंचित है या शाला त्यागी है तथा परिवार द्वारा शिक्षा प्राप्त करने हेतु उचित वातावरण न मिल पाने के कारण शिक्षा से वंचित हो गये है। उनके लिए गैर आवासीय ब्रिजकोर्स योजना प्रारंभ की गई है। इसके अन्तर्गत कम से कम 20 बच्चों का एक समूह बनाकर विद्यालय समय में या उनकी सुविधानुसार–चाहे गये समय में शिक्षक स्वयंसेवक द्वारा शिक्षित कर सामान्य विद्यालयों की कक्षा 3, 4, या 5 में प्रवेश हेतु तैयार किया जायेगा।

इन सभी स्थितियों के बच्चों को शिक्षा– ग्रहण करने की दृष्टि से भिन्न–भिन्न पारिवारिक वातावरण मिला है। सामान्य विद्यालयों के बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने हेतु परिवार का पूर्ण प्रेरक सहयोग मिलता है। जबकि ब्रिजकोर्स के बच्चों को ऐसा कोई सहयोग नहीं मिलता। परन्तु आवासीय ब्रिजकोर्स की बालिकाओं का आवासीय वातावरण इसकी पूर्ति कर देता है। परन्तु गैर आवासीय ब्रिजकोर्स वाले बच्चे इससे भी वंचित हो जाते है।

5.2 शोध समस्या का शीर्षकः

सर्व शिक्षा अभियान के संदर्भ में ब्रिजकोर्स के द्वारा शाला में नामांकित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

5.3 उद्देश्य

- ब्रिजकोर्स के उद्देश्यों को जानना।
- ब्रिजकोर्स में नामांकित बच्चों की पृष्ठभूमि का अध्ययन।
- ब्रिजकोर्स के द्वारा विद्यार्थियों का विद्यालय में नामांकन व ठहराव का अध्ययन।
- ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धी का अध्ययन।
- ब्रिजकोर्स और नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

5.4 परिकल्पना

- ब्रिजकोर्स और नॉनब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मं सार्थक अंतर नहीं है।
- ब्रिजकोर्स और नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की मौखिक उपलब्धि परीक्षा की उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
- ब्रिजकोर्स और नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की लिखित उपलब्धि परीक्षा की उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं हैं।
- ब्रिजकोर्स और नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की हिन्दी लिखित उपलब्धि परीक्षा की उपलब्धि में सार्थक अंतर नही है।
- ब्रिजकोर्स और नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की गणित लिखित उपलब्धि परीक्षा की उपलब्धि में सार्थक अंतर नही है।

5.5 परिणाम

- ब्रिजकोर्स और नॉन ब्रिजकोर्स के बीच सार्थक अंतर है। नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है हमें ऐसा लगता है कि, ये सभी बालक–बालिकाएँ उन परिवारों से है जो सामान्यतः शिक्षा के लिए जागरूक है तथा बच्चों को शिक्षा हेतु समान्यतः संचालित विद्यालयों में प्रवेश दिलाते है साथ ही प्राथमिक स्तर पर शिक्षा की दृष्टि से बालक तथा बालिकाओं को परिवार के सदस्यों द्वारा समान रूप से सहयोग करते है जबकि आवासीय ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों के माता–पिता शिक्षा के प्रति बहुत ज्यादा जागरूक नही होते इसी कारण या तो बच्चे विद्यालय नहीं जाते या पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते है साथ ही अभिभावक भी

बच्चों को ठीक से सहयोग नहीं कर पाते। इसलिए इन बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि कम है।

- ब्रिजकोर्स तथा नॉन ब्रिजकोर्स के बीच सार्थक अंतर है। ऐसा हो सकता है कि, ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों को सही ढंग से घर में शैक्षिक वातावरण नही मिल पाता। इसलिए शुरू से उनका ध्यान घर के काम या खेल में रहता है। ये सभी आदतें उनमें ब्रिजकोर्स में नामांकन के समय भी होती है। इसलिए वे मन लगाकर नहीं पढ़ पाते जबकि नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थी पूर्व प्राथमिक स्तर से ही शिक्षा ग्रहण करते है। इसलिए उनकी शिक्षा में रूचि रहती है इसलिए ब्रिजकोर्स और नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की मौखिक उपलब्धि परीक्षा में सार्थक अंतर है।

- ब्रिजकोर्स तथा नॉन ब्रिजकोर्स के बीच सार्थक अंतर है। हमें ऐसा लगता है कि, ब्रिजकोर्स में वे छात्राएँ होती है जो शाला त्याग या विद्यालय से बाहर होते है उन्हें प्रवेश हेतु प्रेरित किया जाता है परन्तु फिर भी वे शिक्षा के प्रति कम आकर्षित होते हैं उन्हें लिखने का अभ्यास नही होता जबकि नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों को सामान्य रूप से शिक्षा मिलती है। जिनमें उनके परिवार का भी सहयोग होता है और वे विद्यार्थी हमेशा लिखते रहते है इसलिए ब्रिजकोर्स और नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की लिखित उपलब्धी परीक्षा की उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

- ब्रिजकोर्स तथा नॉन ब्रिजकोर्स के बीच सार्थक अंतर नही है। ऐसा हो सकता है कि हिन्दी, ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की मातृभाषा है। वे शुरू से हिन्दी बोलते है। इसलिए हिन्दी लिखने में रूचि भी लेते है इस कारण उनकों हिन्दी सरल लगती है। जबकि नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों को सभी विषय गणित, अंग्रेजी, विज्ञान पढ़ने होते हैं जो कि कठिन होते हैं। इसलिए उनको अपना पूरा ध्यान सभी विषयों पर देना होता है। सामान्यतः ऐसा होता है कि जो विषय कठिन लगते हैं उनको बच्चे पढ़ने से बचते हैं। ब्रिजकोर्स के बच्चों की हिन्दी मातृभाषा होने के कारण विद्यार्थी रूचि लेते होंगे। इसलिए ब्रिजकोर्स और नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों को हिन्दी लिखित उपलब्धि परीक्षा की उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

- ब्रिजकोर्स तथा नॉन ब्रिजकोर्स के बीच सार्थक अंतर है। ऐसा लगता है कि गणित एक कठिन विषय होता है। गणित अभ्यास से ही आता है। नॉन ब्रिजकोर्स के बच्चे विद्यालय के नियमित विद्यार्थी होते है। वे हमेशा पढ़ते लिखते है तथा अभ्यास करते है। घर में भी उनके बड़े भाई–बहनों का प्रभाव भी उन पर पड़ता है। उनको देखकर भी वे काफी कुछ सीखते है जबकि आवासीय ब्रिजकोर्स की छात्राओं को परिवार में प्रेरक वातावरण नही मिल पाता उनको ब्रिजकोर्स में नामांकन के बाद भी नॉन ब्रिजकोर्स के बराबर आने में कुछ समय तो लगता ही है। इसलिए वे नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की तुलना में पिछड़े रहते है। अतः कहा जा सकता है कि ब्रिजकोर्स और नॉन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की हिन्दी लिखित उपलब्धि परीक्षा की उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

5.6 सुझाव

प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से शोधकर्ता ने भोपाल के दीपशिखा स्कूल में आवासीय ब्रिज कोर्स कर रही बालिकाओं एवं इसी विद्यालय की शैक्षिक उपलब्धि, उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, ब्रिजकोर्स के उद्देश्य, कार्यक्रम, ठहराव तथा जिन बच्चों ने ब्रिजकोर्स में प्रवेश लिया उनमें से कितने बच्चों विद्यालय गए का अध्ययन किया है। अतः शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर निम्न सुझाव दिए जा रहे है।

- आवासीय ब्रिज कोर्स में रहने वाले सभी बच्चे काफी निम्न तबके से आए हुए है, जिनमें से कुछ बच्चें कभी विद्यालय नहीं गए तथा कुछ बच्चे बीच में पढ़ाई छोड़ चुके थे इनको आवासीय ब्रिजकोर्स में लाकर उन्हें प्रेरणादायी वातावरण प्रदान किया गया। जिससे उनका शैक्षिक स्तर कुछ ऊपर उठा। इसलिए शासन को बालकों के लिए भी आवासीय ब्रिजकोर्स खोलना चाहिए।
- ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की कमी के कारण गरीब परिवारों के बच्चे किसी न किसी प्रकार के श्रम से जुड जाते हैं, जिससे वे शिक्षा से वंचित हो जाते है या उनकी शैक्षिक उपलब्धि अत्यंत निम्न होती है, अतः ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उत्पन्न किए जाने चाहिए।
- बालिकाओं को परिवार, समाज व विद्यालय से सकारात्मक पुनर्बलन मिलना चाहिए जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धी उच्च हो सके।

- प्राथमिक कक्षाओं के अध्यापन हेतु जहाँ तक हो सके महिला शिक्षिकाओं को ही नियुक्त किया जाना चाहिए जिससे बच्चों को विद्यालय में घर जैसा स्नेहिल वातावरण मिल सकें।
- आवासीय ब्रिज कोर्स में उपलब्ध समस्त 100 स्थानों को भरा रखने का प्रयास किया जाना चाहिए ताकि अधिकतम बालिकाएं आवासीय ब्रिज कोर्स कैम्प का लाभ लेकर शिक्षित हो सकें। इसके लिए ग्रामों में जहां विद्यालय से बाहर 7–14 आयु वर्ग की बालिकाओं की संख्या अधिक हो, वहाँ समय–समय पर मोटीवेशन कैम्पों का आयोजन किया जाना चाहिए।
- विद्यालय में प्राथमिक कक्षाओं के बालक/ बालिकाओं के प्रति स्नेहपूर्ण एवं विश्वसनीय वातावरण बनाने का प्रयास करें जिससे कि बच्चे निर्भिकतापूर्वक अपनेपन के साथ शिक्षा प्राप्त कर सकें।
- आवासीय ब्रिजकोर्स के बच्चों का पारिवारिक स्तर सामान्य से कम होता है। अतः उनकी पूर्ति हेतु उक्त संस्था के शिक्षक बच्चों को विद्यालय में नियमित तथा अधिक समय तक उपस्थित रखे जिससे उनके पारिवारिक वातावरण की कमी की पूर्ति की जा सके साथ ही बच्चों के शिक्षण के साथ–साथ उनकी नैतिक गतिविधियों पर भी अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों को अच्छे कार्य के लिए प्रशंसा व प्रोत्साहन देकर बच्चों को अभिप्रेरित करना चाहिए जिससे उनमें उचित दृष्टिकोण का विकास हो सके।
- बालिकाओं को शिक्षा के प्रति विद्यालय में, शिक्षक द्वारा अभिभावक को अभिप्रेरित करते रहना चाहिए।
- गैर आवासीय ब्रिजकोर्स की शिक्षिकाएं केम्प में सुरूचिपूर्ण वातावरण बनाए रखें जिससे अधिकाधिक बालिकाएं प्रवेश हेतु आकर्षित हो साथ ही कैम्प का वातावरण सुरक्षित, सहयोगात्मक तथा स्वस्थ रहे ताकि अभिभावक अपनी बालिकाओं को प्रवेश दिलाने हेतु स्वयं प्रेरित हों।

5.7 भावी शोध कार्य हेतु सुझाव

- सामान्य विद्यालय तथा आवासीय ब्रिजकोर्स के बालक बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।
- प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शाला में उपस्थित पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव का अध्यन।

- न्यादर्श का आकार बढ़ाकर भविष्य में इस विषय पर शोध कार्य किया जा सकता है।
- प्राथमिक स्तर के बालक व बालिकाओं की विद्यालय में उपस्थिति व शिक्षा में रूचि का अध्ययन।
- आवासीय ब्रिज कोर्स में प्रवेश लेने वाली बालिकाओं के आवासीय कैम्प में रहने से उनके परिवारों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण सभी विषयों में किया जा सकता है।
- बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि को उपलब्धि अभिप्रेरणा किस प्रकार प्रभावित करती है, इस विषय पर अध्ययन किया जा सकता है।
- ब्रिजकोर्स कार्यक्रमों का विस्तार से केसस्टडी के रूप में अध्ययन किया जा सकता है।